अध्याय 2

पश्चिम में उपनिषद् और गीता

2.1 पश्चिम में उपनिषद

भारतीय दर्शन जगत् में प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध 'उपनिषद्' का आदिम ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में समादृत है। वेदान्त दर्शन के तीन भागों श्रुति, स्मृति तथा न्याय में से श्रुति के अन्तर्गत उपनिषदों की गणना की जाती है। उपनिषद् साक्षात् कामधेनु है तथा भगवद्गीता उपनिषद् रूपी कामधेनु का अमृतमय पथ्य है। गीता में लिखा है कि **"सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः"** अर्थात् समस्त उपनिषद् गौ स्वरूप है तथा ग्वालो के प्रिय श्रीकृष्ण उनका दोहन करने वाले है। अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतिपादन का श्रेय वेदान्त अर्थात् उपनिषदों को ही प्राप्त है। मानव जीवन का चरम लक्ष्य पारमार्थिक सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है।[1]

उपनिषद् एतदर्थ प्रामाणिक ग्रन्थ माने जाते है तथा इसके अन्तर्गत उपनिषद् सर्वप्राचीन ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है। इनको वेदों का अन्तिम भाग माना जाता है। आचार्य सदानन्द जी ने वेदान्तसार में लिखा है कि **'वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणं तदुपाकारिणि शारीरिक सूत्रादि'** अर्थात् वेदान्त शब्द उपनिषद् के रूप में प्रामाणिक माना जाता है तथा इसकी व्याख्या शारीरिक सूत्रादि में की गई है। उपनिषद् वस्तुतः भारतीय दर्शन के मूलाधार है।

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ० 74

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

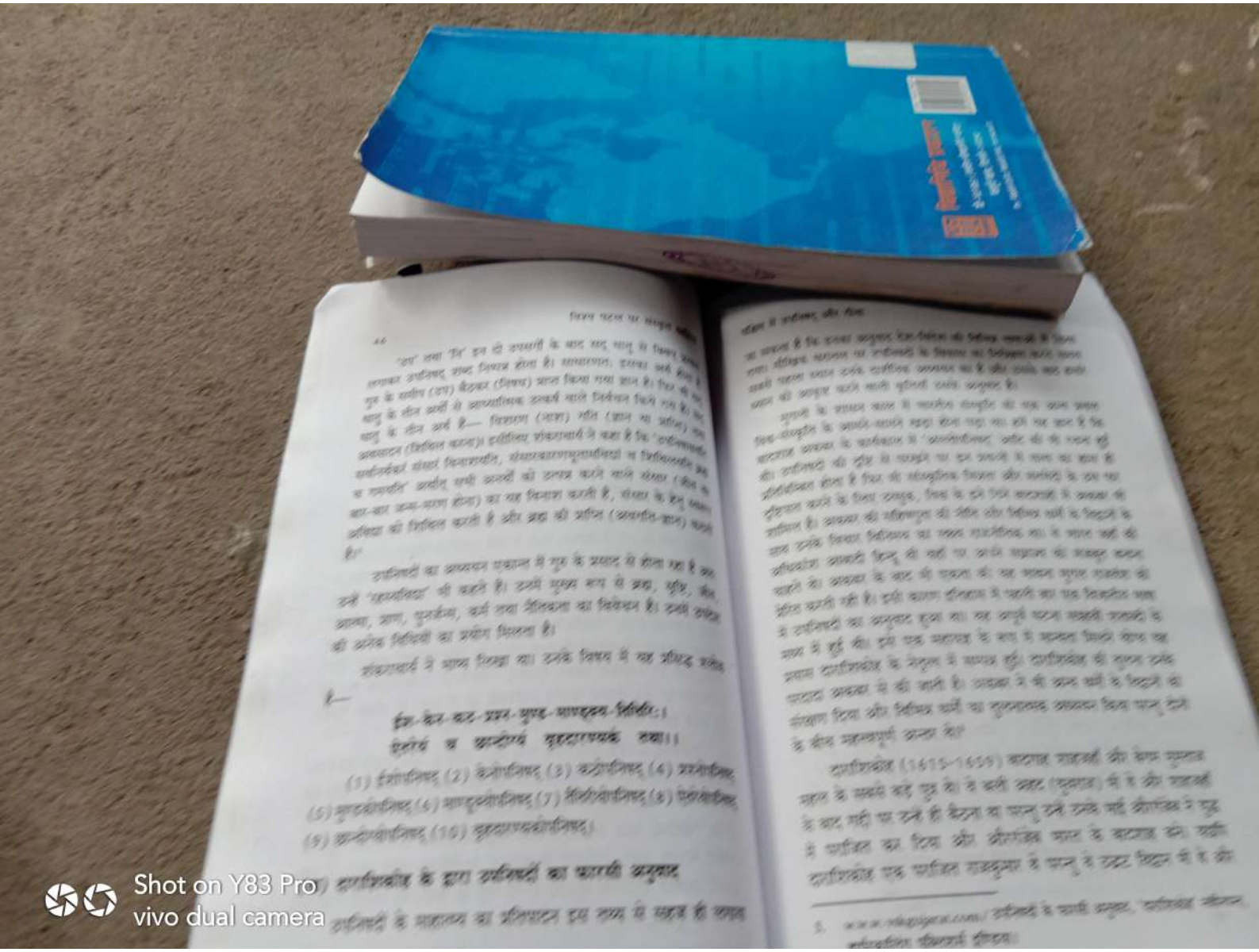

'उप' तथा 'नि' इन दो उपसर्गों के बाद सद् धातु से क्विप् प्रत्यय लगाकर उपनिषद् शब्द निष्पन्न होता है। साधारणतः इसका अर्थ होता है गुरु के समीप (उप) बैठकर (निषद) प्राप्त किया गया ज्ञान है। फिर भी सद् धातु के तीन अर्थों से आध्यात्मिक उत्कर्ष वाले निर्वचन किये गए हैं। सद् धातु के तीन अर्थ हैं— विशरण (नाश) गति (ज्ञान या प्राप्ति) तथा अवसादन (शिथिल करना)। इसीलिए शंकराचार्य ने कहा है कि 'उपनिषद् [illegible] सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूताम् अविद्यां च शिथिलयति ब्रह्म च गमयति' अर्थात् सभी अनर्थों को उत्पन्न करने वाले संसार (जीव के बार-बार जन्म-मरण होना) का यह विनाश करती है, संसार के हेतु भूत अविद्या को शिथिल करती है और ब्रह्म की प्राप्ति (अपरोक्ष-ज्ञान) कराती है।[1]

उपनिषदों का अध्ययन एकान्त में गुरु के प्रसाद से होता रहा है अतः इन्हें 'रहस्यविद्या' भी कहते हैं। इनमें मुख्य रूप से ब्रह्म, सृष्टि, जीव, आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, कर्म तथा नैतिकता का विवेचन है। इनमें उपदेश की अनेक विधियों का प्रयोग मिलता है।

शंकराचार्य ने भाष्य लिखा था। उनके विषय में यह प्रसिद्ध श्लोक है—

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥

(1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) तैत्तिरीयोपनिषद् (8) ऐतरेयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) बृहदारण्यकोपनिषद्।

[illegible]) दाराशिकोह के द्वारा उपनिषदों का फारसी अनुवाद

उपनिषदों के महात्म्य का प्रतिपादन इस तथ्य से सहज ही लगाया

जा सकता है कि इनका अनुवाद [illegible] विभिन्न भाषाओं में किया गया। [illegible] उपनिषदों के [illegible] इनका [illegible] अनुवाद है।

मुगलों के शासन काल में भारतीय संस्कृति को एक अन्य प्रकार [illegible] अकबर के शासनकाल में 'अल्लोपनिषद्' [illegible] उपनिषदों की [illegible] दाराशिकोह के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। दाराशिकोह की तुलना उनके परदादा अकबर से की जाती है। अकबर ने भी अन्य धर्मों के विद्वानों को संरक्षण दिया और विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया परन्तु इन दोनों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है?

दाराशिकोह (1615-1659) बादशाह शाहजहाँ और बेगम मुमताज महल के सबसे बड़े पुत्र थे। वे बड़े उदार (सूफ़ी) थे। [illegible] शाहजहाँ के बाद गद्दी पर उन्हें ही बैठना था परन्तु उन्हें उनके भाई औरंगज़ेब ने युद्ध में पराजित कर दिया और औरंगज़ेब भारत के बादशाह बने। यद्यपि दाराशिकोह एक पराजित राजकुमार थे परन्तु वे उद्भट विद्वान थे और

1. www.vikaspedia.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद, 'दाराशिकोह' [illegible]

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

'उप' तथा 'नि' इन दो उपसर्गों के बाद सद् धातु से क्विप् प्रत्यय लगाकर उपनिषद् शब्द निष्पन्न होता है। साधारणतः इसका अर्थ होता है गुरु के समीप (उप) बैठकर (निषद्य) प्राप्त किया गया ज्ञान है। फिर भी यह धातु के तीन अर्थों से आध्यात्मिक उत्कर्ष वाले निर्वचन किये गये हैं। यह धातु के तीन अर्थ हैं— विशरण (नाश) गति (ज्ञान या प्राप्ति) तथा अवसादन (शिथिल करना)। इसीलिए शंकराचार्य ने कहा है कि 'उपनिषद्भ्यो सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूतामविद्यां च शिथिलयति ब्रह्म च गमयति' अर्थात् सभी अनर्थों को उत्पन्न करने वाले संसार (जीव का बार-बार जन्म-मरण होना) का यह विनाश करती है, संसार के हेतु स्वरूप अविद्या को शिथिल करती है और ब्रह्म की प्राप्ति (अवगति-ज्ञान) कराती है।[2]

उपनिषदों का अध्ययन एकान्त में गुरु के प्रसाद से होता रहा है अतः उन्हें 'रहस्यविद्या' भी कहते हैं। उनमें मुख्य रूप से ब्रह्म, सृष्टि, जीव, आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, कर्म तथा नैतिकता का विवेचन है। उनमें उपदेश की अनेक विधियों का प्रयोग मिलता है।

शंकराचार्य ने भाष्य लिखा था। उनके विषय में यह प्रसिद्ध श्लोक है—

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्ड्क्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं वृहदारण्यकं तथा।।

(1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) तैत्तिरीयोपनिषद् (8) ऐतरेयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) वृहदारण्यकोपनिषद्।

(क) दाराशिकोह के द्वारा उपनिषदों का फारसी अनुवाद

उपनिषदों के माहात्म्य का प्रतिपादन इस तथ्य से सहज ही लगाया

---

2. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ० 75

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

जा सकता है कि इनका अनुवाद देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में किया गया। मौखिक धरातल पर उपनिषदों के विकास का निरीक्षण करते समय सबसे पहला स्थान उनके दार्शनिक अध्ययन का है और उसके बाद हमारे ध्यान को आकृष्ट करने वाली कृतियाँ उसके अनुवाद है।

मुगलों के शासन काल में भारतीय संस्कृति को एक अन्य प्रबल विश्व-संस्कृति के आमने-सामने खड़ा होना पड़ा था। हमें यह ज्ञात है कि बादशाह अकबर के कार्यकाल में 'अल्लोपनिषद्' आदि की भी रचना हुई थी। उपनिषदों की दृष्टि से परखने पर इन प्रयत्नों में सत्य का ह्रास ही प्रतिबिम्बित होता है फिर भी सांस्कृतिक भिन्नता और मतभेदों के उस पार दृष्टिपात करने के लिए उत्सुक, विश्व के इने गिने बादशाहों में अकबर भी शामिल है। अकबर की सहिष्णुता की नीति और विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ उनके विचार विनिमय का लक्ष्य राजनीतिक था। वे भारत जहाँ की अधिकांश आबादी हिन्दू थी वहाँ पर अपने सम्राज्य को मजबूत बनाना चाहते थे। अकबर के बाद भी एकता की यह भावना मुगल राजवंश को प्रेरित करती रही है। इसी कारण इतिहास में पहली बार एक विजातीय भाषा में उपनिषदों का अनुवाद हुआ था। यह अपूर्व घटना सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुई थी। इसे एक महायज्ञ के रूप में मान्यता मिलने योग्य यह प्रयास दाराशिकोह के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। दाराशिकोह की तुलना उनके परदादा अकबर से की जाती है। अकबर ने भी अन्य धर्मों के विद्वानों को संरक्षण दिया और विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया परन्तु दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर थे।[3]

दाराशिकोह (1615-1659) बादगाह शाहजहाँ और बेगम मुमताज महल के सबसे बड़े पुत्र थे। वे बली अहद (युवराज) भी थे और शाहजहाँ के बाद गद्दी पर उन्हें ही बैठना था परन्तु उन्हें उनके भाई औरगंजेब ने युद्ध में पराजित कर दिया और औरगंजेब भारत के बादशाह बने। यद्यपि दाराशिकोह एक पराजित राजकुमार थे परन्तु वे उद्भट विद्वान भी थे और

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

उनका जीवन कई शानदार उपलब्धियों से भरा हुआ था।[4] उन्होंने [illegible] का गहराई से अध्ययन किया और उपनिषदों का फारसी भाषा में [illegible] भी किया। मुगल राजकुमार दाराशिकोह ने 1656-57 ई० में [illegible] उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया था। जिसमें से 3 ऋग्वेद से, [illegible] यजुर्वेद से, 1 सामवेद से तथा 36 अथर्ववेद से उपनिषदें थीं। उसने [illegible] ग्रन्थ का नाम 'सिर्रे अकबर' रखा। इस नाम को रखते हुए उसने तीन [illegible] की ओर सङ्केत किया। 'सिर्रे अकबर' का अर्थ है महान् रहस्य। इसमें [illegible] सङ्केत उपनिषद् के अर्थ की ओर है। दूसरा संङ्केत अकबर महान के [illegible] सम्बन्धी कोशिशों की ओर है तीसरे स्तर पर दारा ने 'सिर्रे अकबर' के व्याख्या करते हुए लिखा है "आयते तौहीद की सिर्रे पोशीदानी [illegible] अर्थात् अद्वैत के ऐसे रहस्य का पद्य जिन्हें गुप्त रखना जरूरी है।" [illegible] शिकोह मानते है कि कुरान में जिस गुप्त का वर्णन वह उपनिषद् ही है इसलिए उसने उपनिषदों के अनुवाद का निश्चय किया। दाराशिकोह द्वारा उपनिषदों के अनुवाद का मुख्य प्रयोजन एकेश्वरवाद की खोज थी जिसे वह कुरान के अन्यत्र खोज रहा था इसीलिए वह अपनी भूमिका में भी लिखता है कि वह अनुवाद कार्य अपने बच्चों, स्त्रियों और सत्यान्वेषी लोगों के आध्यात्मिक लाभ के लिए कर रहा है। इसीलिए उसने अनेक धर्मग्रन्थों को पढ़ा तथा सन्त फकीरों और ज्ञानियों से विचारविमर्श किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एकेश्वरवाद की सबसे प्राचीन व्याख्या उपनिषदों में है। उसके अनुवाद की पाण्डुलिपि 1775 में प्रसिद्धि फ्रांसीसी प्राच्यविद्याविद् अंकेतिल डुपेरों को मिली। डुपेरों ने उपनिषदों के दारा के फारसी अनुवाद का लैटिन और फैञ्च में अनुवाद किया। उसका लैटिन 1801 और 1802 में छपा। इसी फ्रैञ्च अनुवाद के प्रकाशन के बाद यूरोप के विद्वानों और दार्शनिकों को उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त हुआ।[5] 'सिर्रे अकबर का [illegible]

4. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' [illegible]

अनुवाद 1882 में प्रकाशित हुआ।' दारा शिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद करते समय शङ्कराचार्य के भाष्य को आधार बनाया है। दारा ने 'सिर्रे अकबर' की भूमिका में लिखा है कि वह अनुवाद का कार्य अपने अपने बच्चों, मित्रों और सत्यान्वेषी लोगों के अध्यात्मिक लाभ के लिए कर रहा है। दारा ने उपनिषदों का फ़ारसी में जो अनुवाद किया था, उसके लैटिन और फिर जर्मन अनुवाद के माध्यम से ही उपनिषदों का ज्ञान यूरोप पहुँचा। तब जाकर यूरोप संस्कृत के ज्ञान सागर से परिचित हुआ। इसे फ्रेंच यात्री बर्नियर फ्रांस ले गया था जहाँ उसका लातिन-भाषा में अनुवाद हुआ। वह 'औपनिखत' के नाम से 1809 ई० में प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह अनुवाद अपूर्ण और अव्यवस्थित था किन्तु उसे पढ़कर जर्मन दार्शनिक शॉपिनहावर इतना अभिभूत हो गया था कि उपनिषदों को उसने विश्व की दार्शनिक विचारधारा का मार्गदर्शक का मार्गदर्शक तो कहा ही, व्यक्तिगत प्रभाव के रूप में स्वीकार किया कि सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। यह मेरे जीवन के लिए सान्त्वना है तो मृत्यु के अनन्तर भी सान्त्वना भी होगी। (In the whole world there is no study so elevating as that of upanisads at has been the solace of my life and will be the solace of my death) पाश्चात्य जगत में पॉल डिउसन (Deussen) तथा आर० ह्यूम ने उपनिषदों के अनुवाद किये एवम उनके सिद्धान्तों पर प्रकाश डाले।[7]

उपनिषदों और भगवद्गीता के अतिरिक्त दाराशिकोह ने **तालमुद** (यहूदी धर्म ग्रन्थ) और **न्यू टेस्टामेन्ट** (ईसाई बाइबिल का दूसरा हिस्सा) का भी अध्ययन किया। उन्होंने अपना जीवन वेदांतिक और ईस्लामिक अध्यात्म में समन्वय बैठाने को समर्पित कर दिया। वे मानते थे कि कुरान में अदृश्य किताब **'किताब अलमकनन'** वास्तव में उपनिषद् थे। उन्होंने संस्कृत [illegible] उपनिषद्, गीता, योगवशिष्ठ का फारसी में अनुवाद किया।[8]

... फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त,

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

दाराशिकोह कबीर के अनुयायी बाबा लाल दास वैरागी के भी काफी नजदीक थे तथा वे फाँदर बुजी से भी आध्यात्मिक मामलों में ज्ञान प्राप्त करते थे। हिन्दू धर्म ग्रन्थों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उन्होंने बनारस के पंडितो और सन्यासियों के साथ भी काफी वक्त गुजारा। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है **'मजमा-उल-बहरीन'** अर्थात् (दो महासागरों का मिलन है।)[९] इसमें उन्होंने ईस्लाम और हिन्दू धर्म के बीच की समानताओं को ढूढ़ने की कोशिश की है। वे लिखते है कि **''मजमा-उल-बहरीन''** सत्य जानने वाले दो समूहों के सत्य और ज्ञान का संकलन है। अपनी इस पुस्तक में दाराशिकोह ने उन बिदुंओं का विस्तार से विवरण किया है जहाँ ये एकदम अलग-अलग दिखने वाले धर्म एक-दूसरे से मिलते हैं। वे इस तथ्य से अच्छी तरह से वाकिफ थे कि सत्य-बहुआयामी होता है और वे धार्मिक बहुदेववाद के जबरदस्त पैरोकार थे। उन्होंने अपने अध्ययन से यह साबित किया कि हिन्दूधर्म और ईस्लाम में कई चीजे समान है और वे एक दूसरे के प्रेरक है। उन्होंने भारतीय ईस्लामिक परम्परा को मजबूती दी और उन्हें संकीर्णता से मुक्त किया और भारतीय परम्परा का हिस्सा बनाया। वे यह नहीं मानते थे कि कोई धर्म किसी दूसरे धर्म से श्रेष्ठ है। धर्मों की उनकी व्याख्या उदारवादी और समावेशी थी। उन्होंने लिखा है कि– **'अगर में जानता हूँ कि एक हिन्दू पाप में डूबा हुआ है परन्तु एकेश्वर वाद की बात कहता है तो में उसके पास जाऊँगा, उसे सुनूँगा और उसके प्रति आभारी रहूँगा।**[१०] इस सन्दर्भ में 'मजमा उल बहरीन' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है क्योंकि वह दोनों धर्मों की समानताओं पर केन्द्रित है और कहती है कि सभी धर्म हमें सत्य की राह पर ले जाते हैं। यह पुस्तक 22 खंडों में विभाजित है और इसमें प्रकृति के मूल तत्त्वों से लेकर हमारी ज्ञानेन्द्रियों, चेतना आत्मा और धार्मिक परम्पराओं की विशद विवेचना है।[11] इस पुस्तक का जो सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है वह है इसमें दोनों धर्मों के ईश्वर के गुणों

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

का वर्णन और उसकी तुलना है। ईस्लाम के अनुसार ईश्वर के दो गुण **जमाल** या **सुन्दरता** और **जलाल** या महिमा अथवा वैभव। हिन्दू धर्म में ईश्वर के तीन रूप बताए गए है– ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो क्रमशः सृष्टि, अस्तित्व और विनाश के प्रतीक है। यह ईस्लाम में वर्णित, जिब्राएल, मीकाइल और इस्राफील से मिलते जुलते हैं। जिब्राएल सृष्टि के फरिस्ते है, मीकाइल अस्तित्व के और इस्राफील संहार के फरिश्ते हैं। इससे यह पता चलता है कि दोनों धर्मों में कुछ मूलभूत समानताएँ है।[12]

तौहीद या एक ईश्वर की अवधारणा

तौहीद या एक ईश्वर की अवधारणा ने दाराशिकोह को बहुत आकर्षित किया। उन्हें बहुवाद में गहरी निष्ठा थी परन्तु वे फिर भी यह मानते थे कि सभी रास्ते हमें एक ही ईश्वर की ओर ले जाते हैं। उन्होंने कहा था कि **"तौहीद का रहस्य यह है कि हे मेरे मित्र, इसे समझो कहीं पर कुछ भी ऐसा नहीं है जो ईश्वर न हो। जो कुछ तुम उससे अलग देखते या जानते हो उसका नाम भले ही कुछ और हो परन्तु वास्तव में वह ईश्वर ही है।"**[13]

तौहीद या ईश्वर की एकात्मकता की खोज ने उन्हें अनेक धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। पवित्र कुरान में भी कई बातें ऐसी है जिनकी व्याख्या करना मुश्किल है। उन्होंने अपने मन में उपजे प्रश्नों के उत्तर उन विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों में ढूढ़ने की कोशिश की जो वास्तविक तौर पर एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हैं। परन्तु उन्हें इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हिन्दू धर्म ग्रन्थों का सहारा लिया और 52 उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया। उपनिषदों में उनके मन में घुमड़ रहीं कई गुत्थियों के उत्तर मिले और उन्होंने लिखा है कि उपनिषद् 'पहलो दिव्य पुस्तक' और एकेश्वरवाद के मूल स्रोत है। उन्होंने यह भी लिखा है कि उपनिषद् को **'किताब-ए-मन्तूम'** (गुप्त पुस्तक) है जिसका जिक्र कुरान

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

... "निसन्देह एक छपी हुई किताब है ... लोग जान पाते हैं जो पवित्र होते हैं। ... जहानों के रब्ब की ओर से है।" (कुरान, अध्याय ...)

... दरबार में हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के विद्वानों को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाता था। दारा के प्रभाव के कारण ... कट्टरपन्थी रवैया नहीं अपनाता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ... गुणगान करते नहीं थकते थे। मुल्ला उसे महदी (मार्गदर्शक) कहते ... पण्डित उसकी तुलना जगदीश्वर से करते थे। पण्डित राज जगन्नाथ ने उनकी इस शब्दों में प्रशंसा की है–

दिल्लीश्वरों या जगदीश्वरों वा मनोरथान पूरयितु समर्थः।
अन्यैनृपालैः परदीयमानः शाकाय या स्यात्तलवणाय वा स्यात।"[15]

दाराशिकोह ने कभी ईस्लाम को नहीं त्यागा। वह धर्मनिष्ठ मुसलमान शासक थे। परन्तु उन्होंने अन्य धर्मों के ग्रन्थों का उपयोग ईस्लाम की अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए किया। उन्होंने हिन्दू धर्म का अध्ययन इसलिए किया क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि दोनों धर्मों के बीच समानताएँ और एकरूपता है। उनका कहना था कि भले ही दोनों धर्मों के कर्मकाण्ड और पूजा पद्धतियाँ अलग हो परन्तु उनकी आत्मा एक ही है। इस दृष्टि से वे विभिन्न धर्मों के बीच समन्वय और एकता के पक्षधर थे और भारत की मिली जुली संस्कृति में उनका अमूल्य योगदान था।[16] इसलिए उन्होंने उपनिषदों का जो अनुवाद किया उसका शीर्षक था **'सिर ए अकबर'** (महान रहस्य) है। यह पुस्तक द्वारा शिकोह की उदार शोच का परिचायक है। वे अपने प्रश्नों का उत्तर ढूढ़ने और सत्य की तलाश में अन्य धर्मों के ... सहारा लेने से भी तनिक भी हिचकिताते नहीं थे।[17]

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

(ख) दाराशिकोह पर सूफी ...

अब प्रश्न यह उठता ... दुनियादारी से दूर विरक्त ... होता था। आचरण, सद्वि... इस कला से सभी सम्प्रद... अपवाद स्वरूप अपने घ... है।

९वी शताब्दी में ... यह इस्लाम प्यार का ... से प्रभावशाली है। यह ... विपरीत है। प्रारम्भिक ... प्रार्थना और एकजुट ... भिक्षुओं और नन ने ... मोटे कपड़े पहनते ... सूफीवाद जल्द ही ... ईश्वर के प्रत्यक्ष ... खोज करते हैं। ... 'आध्यात्मिक ह... अभ्यास के कह... कुरान के शब्दों ... और युद्धों से ... कारण है कि ... उनकी आध्य... आने से हुई ...